RNI No - RAJHIN/2003/9899 :: Postal Registration No - Sri Ganganagar/105/2018-2020
Published on 01 December 2018 :: Posted at RMS, Sri Ganganagar on 2nd or 3rd December 2018

मासिक पत्रिका

अजायब ✲ बानी

वर्ष : सोलहवां | अंक : आठवां | दिसम्बर–2018

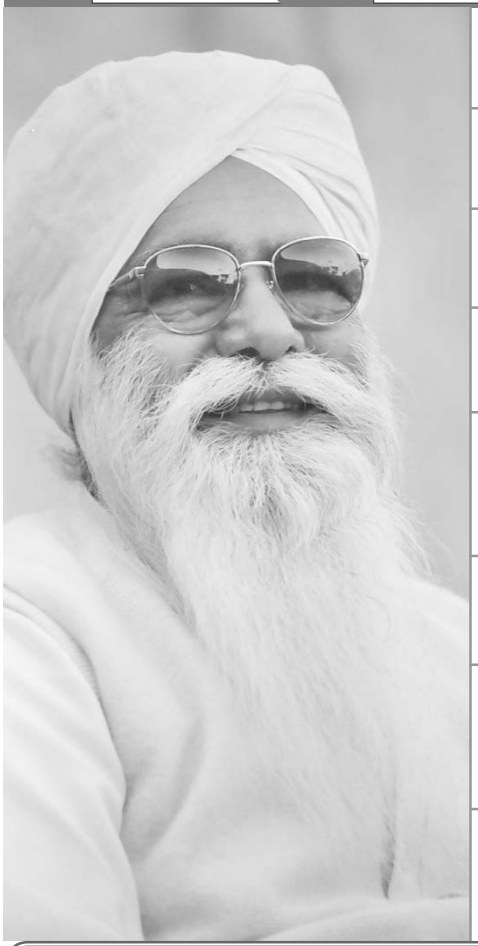

मुद्दत होई यार 4
(नया शब्द)

ऐस दिल नूं मैं 5
(नया शब्द)

दुःख कीनूं दस्सां 6
(नया शब्द)

पवित्र चरण 7
(भजन में बिठाने से पहले)

सतसंग-परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज
साधुओं की महिमा 9
(गुरु अर्जुनदेव जी की बानी) मुम्बई

संदेश 21
(प्रेमियों को आश्रम के बारे में संदेश)

सतसंग-परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज
आत्मा की खुराक 25
(गुरु नानकदेव जी की बानी) 16 पी.एस.आश्रम (राज.)

धन्य अजायब 34
16 पी.एस. आश्रम व मुम्बई में सतसंग के कार्यक्रमों की जानकारी

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक व संपादक : प्रेम प्रकाश छाबड़ा ने नेशनल प्रिन्टर्स, नारायणा, नई दिल्ली से छपवाकर सन्तबानी आश्रम 16 पी.एस. रायसिंह नगर - 335 039 जिला - श्री गंगानगर (राजस्थान) से प्रकाशित किया। मूल्य : ₹5/-

e-mail : dhanajaibs@gmail.com 201 Website : www.ajaibbani.org

मुद्दत होई यार विछुड़याँ पा फेरा

मुद्दत होई यार विछुड़याँ पा फेरा,
रूल गऐ विच संसार विछुड़याँ पा फेरा,

1. होई कोंण खुनामी, जो तुं मुड़या इ ना, (2)
तरले ओसियां पाऐ, तुं ते सुणया इ ना,
आजा आजा आजा (2), मुड़या पा फेरा,
मुद्दत होई यार .....

2. लंघदे ने दिन साडे, तरले पोंदेयां दे, (2)
साह जे दाता चलदे, साडे जिओं देयां दे,
करे यतन बहुत मैं दाता (2), बझदा ना जेरा,
मुद्दत होई यार .....

3. मन वी दागी, तन वी दागी हो गया है, (2)
समझ नी ओंदी दाता, की की हो गया है,
बणके आजा वैद्य (2) , जे धरजां मैं जेरा,
मुद्दत होई यार .....

4. हिम्मतां टुटियां हौंसले टुटे, तन वी मेरा थक गया, (2)
सुण सुण गल्लां ताने फिकरे, मन वी मेरा अक्क गया,
दिसदा ना कोई चारे पासे (2), पै गया जिवें है नेरा,
मुद्दत होई यार .....

5. रब सी मेरा रब है मेरा, सब कुछ तूं ही है मेरा, (2)
देख ना अवगुण अजायब जी, मैं तेरा बस मैं तेरा,
'गुरमेल' दे कोले आके (2), बैह जा इक वेरां,
मुद्दत होई यार .....

ऐस दिल नूं मैं किंझ समझांवां जी

ऐस दिल नूं मैं किंझ समझांवां जी,
उम्रां तां लंघ चलियां दाता जी, उम्रां तां लंघ चलियां.....

1. दुःख विछोड़े दा बहुत सतोंदा वे, (2)
सोहणया दर्श बिना चैन नहीं ओंदा वे, (2)
बह जा सामणें तूं इक वारी आके जी, उम्रां तां लंघ चलियां.....

2. दर्द विछोड़ा अज किने साल होए वे, (2)
जांणदा ऐं तेरे बाजों किना अस्सीं रोए वे, (2)
हुण हिम्मतां ने तेरे बाजों हारियां जी, उम्रां तां लंघ चलियां.....

3. तेरे ही विछोड़े वाली अग्ग मैं तां सेकदी, (2)
बैठ तेरे दर उत्ते तेरा ही राह देखदी, (2)
कीते वादेयां नूं आप निभा जा जी, उम्रां तां लंघ चलियां.....

4. मसां मसां जिंदड़ी तैं प्यार विच रंगी वे, (2)
जापदा है जन्मा तों तेरे नाल मंगी वे, (2)
बण सजण तूं डोली मेरी चा जी, उम्रां तां लंघ चलियां.....

5. समझ यतीम दाता तूं ही गल लाया सी, (2)
प्यार वाला बीज दाता आप तूं लगाया सी, (2)
दर्श तेरे बिना रूह मुरझावे जी, उम्रां तां लंघ चलियां.....

6. प्यार दा पुजारी दाता अजायब जी सदावें तूं, (2)
सागर प्यार दा कृपाल जिनूं गावें तूं, (2)
ओसे प्यार नूं 'गुरमेल' कुरलावे जी, उम्रां तां लंघ चलियां.....

दुःख कीनूं दस्सां

दुःख कीनूं दस्सां, वे मैं दुःख कीनूं दस्सां,
दुःख कीनूं दस्सां, दिल वाले दाता मेरेया,
दुःख कीनूं दस्सां, वे मैं दुःख कीनूं दस्सा,

1. भरया प्याला पापां गमां नाल दातेया,
सुणदा नी कोई तेरे बाजों दुःख दातेया, (2)
करां अरजोई (2) तेरे तांईं मेरे दातेया,
दुःख कीनूं दस्सां, दिल वाले .....

2. जीव हां निमाणा, कोई शहंशाह तां हां नहीं,
छोटी जेही औकात मेरी, समझदा वी हां नहीं, (2)
छड दित्ता जित्थे (2) ऐहे फानी संसार आ,
दुःख कीनूं दस्सां, दिल वाले .....

3. संसार विच दाता, जदों तूं विसारेया,
दुःखां दे खजाने भरे, मेरे कोल दातेया, (2)
झाक इक वारी (2) मेरे वल्ल मेरे दातेया,
दुःख कीनूं दस्सां, दिल वाले .....

4. खुशी सुख हासा, मौज मस्ती की हुंदे ने,
मंदभागे जीव, काल नगरी च रोंदे ने, (2)
जख्मी है दिल (2) तन रोगां ने है खा लया,
दुःख कीनूं दस्सां, दिल वाले .....

5. सुण लै पुकार, अजायब कृपाल दे दुलारेया,
ओही हां मैं जीव, जिनूं 'गुरमेल' सी पुकारेया, (2)
रख लै तूं रख (2) पत्त मेरी ओ दातारेया,
दुःख कीनूं दस्सां, दिल वाले .....

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों को भजन में बिठाने से पहले

पवित्र चरण

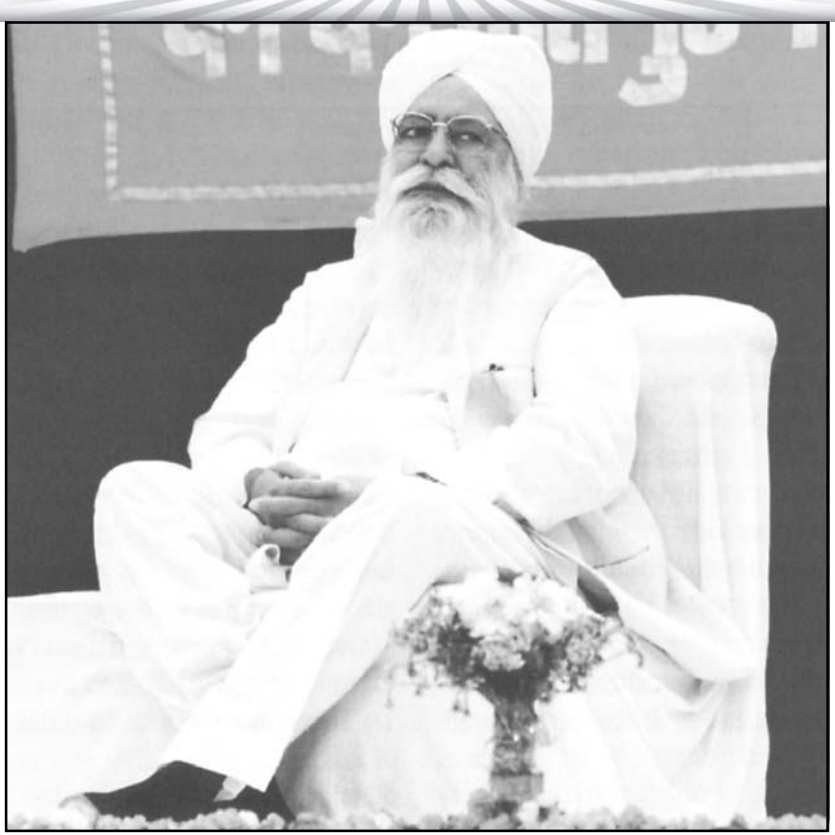

हिन्दुस्तान में अढ़सठ तीर्थ पवित्र माने जाते हैं। इन पवित्र तीर्थों पर जाकर हमारे जन्म-मरण का चक्कर समाप्त हो जाता है। उससे भी ज्यादा **पवित्र चरण** परमात्मा कृपाल ने इस जगह रखे हैं जहाँ हम सब बैठे हैं। सन्त-महात्मा चलते-फिरते तीर्थ होते हैं। वे जहाँ अपने **पवित्र चरण** रख देते हैं वह जगह सेवकों के लिए बहुत महानता रखती है। उस जगह जाकर हम अपने आपको भूल जाते हैं, अपने जीवन को पवित्र बना लेते हैं। गुरु रामदास जी कहते हैं:

जित्थे जाए बहै मेरा सतगुरु सोई थान सुहावा।
गुरु सिक्खी सो थान भालया ले धूड़ मुख लावां।।

मैं परमपिता परमात्मा कृपाल के आगे अरदास करता हूँ कि आप हमें सदबुद्धि बख्शें ताकि हम आपके बताए हुए उपदेश को समझ सकें, आपके दिए हुए प्यार को प्राप्त कर सकें। आज परमात्मा कृपाल ने दया करके हमें जो समय दिया है यह बड़ा कीमती समय है। हर सतसंगी को इस कीमती समय से फायदा उठाना चाहिए। हम सब जिस मकसद के लिए यहाँ आए हैं उसे ध्यान में रखकर ही यहाँ रहना है। हमने यहाँ वही पवित्र काम करना है जिसके लिए हम यहाँ इकट्ठे हुए हैं।

गुरु अमरदेव जी महाराज से कुछ सिक्खों ने विनती की कि हमें सुबह उठकर क्या करना चाहिए, कौन सा नाम जपना चाहिए?

आप कहते हैं, ''परमात्मा कण-कण में व्यापक है। सन्त हमें जिस शब्द के साथ जोड़ते हैं उस 'शब्द' के साथ जुड़ जाएं। परमात्मा ही सबको पैदा करने वाला है और वह जिसे बड़ाई देना चाहता है उसे अपने नाम के साथ जोड़ देता है। जो उस नाम के साथ जुड़े रहते हैं वह उस परमात्मा के घर वापिस पहुँच जाते हैं।''

जिस तरह मैं हर कार्यक्रम में प्रेमियों को बताया करता हूँ कि अभ्यास में बैठने से पहले हमारे अंदर दुनिया के जो सकंल्प-विकल्प उठ रहे हैं उन्हें शान्त करें। फिर हमें जो पांच पवित्र नाम बताए गए हैं उन्हें अपने अंदर अच्छी तरह दोहरा लें। सिमरन करते हुए दोनों आँखों के दरम्यान तीसरे तिल पर एकाग्र हों।

अभ्यास को कभी बोझ न समझें प्रेम-प्यार से करें। हाँ भई! आंखें बंद करके अपना अभ्यास शुरू करें।

***

July 1996

सतसंग– परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

साधुओं की महिमा

गुरु अर्जुनदेव जी की बानी DVD-574 मुम्बई

परमपिता परमात्मा सावन-कृपाल के चरणों में नमस्कार है जिन्होंने हमें अपना यश करने का मौका दिया है। महाराज सावन सिंह जी गुरु ग्रंथ साहब के मुत्तलिक कहा करते थे कि गुरु नानकदेव जी महाराज और दसों गुरुओं ने जिसमें खासकर अपने पाँचवे चोले गुरु अर्जुनदेव जी के जामें में आकर संसार पर जो उपकार किया उसे भुलाया नहीं जा सकता। गुरु अर्जुनदेव जी ने बहुत से सन्तों की बानी इकट्ठी करके एक जगह छाप दी।

सन्त जब भी संसार में आते हैं वे सब कौमों, सब मुल्कों को अपना समझते हैं उनका किसी के साथ भिन्न-भेद नहीं होता। गुरुग्रंथ साहब में हर जाति के महात्मा हिन्दु, मुसलमान और पंडितो की बानी है। गुरु ग्रंथ साहब रूहानियत का खजाना है। सन्तमत पर चलने वाले जिज्ञासुओं के लिए इसे समझना बहुत जरूरी है क्योंकि इसके अंदर सन्तों के खास रूहानी तजुर्बे हैं जो उन्हें अपनी जिंदगी में प्राप्त हुए थे।

हमें गुरुग्रंथ साहब के अलावा जिन महात्माओं की बानियां मिलती हैं चाहे वह कबीर साहब, नामदेव, रविदास, तुलसी साहब की बानी है, इन महात्माओं के संसार से जाने के बाद उनके विरोधियों ने उनकी बानियों में कुछ हेर-फेर किया है। गुरु ग्रंथ ही एक ऐसी बानी है जिसे उसी तरह संभालकर रखा हुआ है। बहुत से फिरके इस विरासत के हकदार हैं अगर कोई इसे तोड़ने की या कम-ज्यादा करने की कोशिश करता है तो उसे नीचा देखना पड़ता है।

महाराज सावन सिंह जी हमेशा ही बहुत दर्द भरे लहजे में कहा करते थे कि गुरु नानकदेव जी सिक्ख कौम के लिए रूहानियत का बहुत बड़ा खजाना छोड़ गए हैं लेकिन इन बेचारों को यह पता नहीं कि बानी को किस तरह विचारना है? हर सिक्ख बानी पढ़ने पर जोर देता है, हम दिन-रात इकट्ठे होकर इस बानी को पढ़ते भी हैं।

बाबा जयमल सिंह जी ने भी इस बानी को पढ़ा। स्वामी जी महाराज के दरबार में भी इस बानी का नित्यनियम चलता था। महाराज कृपाल ने भी बचपन में इस बानी को बहुत पढ़ा। मेरे नित्यनियम में ये आठ बानियां रही हैं। इस बानी को पढ़कर हमारे दिल के अंदर परमात्मा से मिलने का अथाह प्यार पैदा होता है।

इस बानी में चार चीजों का सार है कि नाम के बगैर मुक्ति नहीं। यह नाम लिखने-पढ़ने और बोलने में नहीं आता, यह बिना लिखा कानून बिना बोली भाषा है। इसमें सतगुरु की महिमा लिखी हुई है कि सतगुरु के बिना नाम नहीं मिलता। इसमें पूरे और अधूरे गुरु के बारे में बहुत खोलकर लिखा हुआ है। सच्चाई तो यह है कि जो इस बानी को पढ़कर विचारता है वह कभी भी दुकानदार गुरु के पास जाकर नहीं फँसता, वह सच्चे गुरु के पास जाएगा।

जिस महात्मा के अंदर ये सिफतें होंगी जिसने जिंदगी में 'शब्द-नाम' का अभ्यास किया है, वह अपनी रोजी-रोटी खुद अपने हाथों से कमाकर खाता है और अपनी कमाई से लंगर में भी डालता है। ऐसा महात्मा अपने सेवकों को नाम की कमाई करने के लिए कहता है, वह किसी की निन्दा करने के लिए नहीं कहता और न ही किसी की निन्दा करता है।

मुझे मेरे गुरु ने बहुत प्यार से समझाया था, ''सुपुत्र बनना है पुत्र नहीं बनना।'' मैंने आपसे कहा, ''पुत्र और सुपुत्र तो आपने

ही बनाना है, पुत्र और सुपुत्र में क्या भेद है?'' आपने कहा, ''पुत्र वह होता है जो पिता की कमाई रोजी-रोटी पर गुजर करे, खुद कमाई न करे। सुपुत्र वह होता है जो सारी जिंदगी अपने लिए किसी से कुछ न ले। सुपुत्र का हाथ देने के लिए होता है लेने के लिए नहीं होता। जब हम अपने लिए कुछ माँगते हैं तो हाथ फैलाते हैं।''

बहुत से पश्चिमी प्रेमी जब 16 पी.एस. आश्रम आते हैं तो वे मुझसे पूछते हैं कि आप अपने लिए कोई सेवा बताएं? मैं कहा करता हूँ कि लंगर परमात्मा कृपाल का है, आप मुझे यही कहकर गए हैं कि लंगर मेरा है मुझे इसकी फिक्र है। मुझे इसमें सेवा डालने का हुक्म है अगर और भी किसी का भाव हो तो वह सेवा डाल लेता है नहीं तो हुजूर की दया से मेरे पास जितनी संगत आती है उसका खर्चा आसानी से पूरा हो जाता है। अगर हम ऐसे गुरु परमात्मा के सुपुत्र ढूंढे तो हमें लाखों-करोड़ो में एक आध ही मिलता है। गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

गुरु पीर सदाए मंगण जाए, तांके मूल न लग्गी पाए।
घाल खाए कुछ हत्थों दे, नानक राह पछाणे से।।

इसके अंदर तीसरी चीज वातावरण है। जिसमें हमें अपनी गलतियों का पता लगता है फिर हम अपने आपको सुधारने की कोशिश करते हैं। सन्त भाषा में इसे सतसंग या सन्त सभा भी कहते हैं। गुरु नानकदेव जी ने इसे कहीं सन्त मंडली कहकर भी बयान किया है, जहाँ परमात्मा के भक्त इकट्ठे होकर परमात्मा के बारे में चर्चा करते हैं। हमारे ऊपर अच्छी संगत का बहुत जल्दी असर होता है और बुरी संगत का भी बहुत जल्दी असर होता है।

साकत संग न कीजिए दूरो जाईऐ भाग।
वासन कारो परसिए तो कुछ लागे दाग।।

निगुरे परमात्मा की भक्ति नहीं करते सारा दिन शराबों-कबाबों में लगे रहते हैं। वे परमात्मा की याद को भूल चुके हैं अगर आप उनकी वासना भी लेंगे तो आपकी कुल को दाग लगने का डर है आप उनके नजदीक न जाएं।

चौथी बात जिस पर गुरु साहिबानों ने जोर दिया है वह मेहनत है। हम नाम ले लेते हैं बड़ा उत्साह और प्यार होता है तभी हम नाम लेते हैं फिर हम आलस करते हैं या तो यह बहाना बनाते हैं कि गुरु अपने आप दया करेगा, गुरु करवाएगा तो कर लेंगे या अभी हमारा समय नहीं आया समय आने पर सब कुछ हो जाएगा।

आप सोचकर देखें! मेहनत के बिना सोना खान से खोदकर नहीं निकाल सकते। मोती प्राप्त करने के लिए गहरे समुंद्र में डुबकी लगानी पड़ती है। मेहनत के बिना हम व्यापार में कामयाब नहीं हो सकते। जहाँ हम व्यापार का सामान लाकर रखते हैं उस जगह को कितना साफ करते हैं अगर वह जगह गंदी हो जाती है तो उसे फिर से साफ करते हैं। जमींदारा एक मोटा सा काम है इसमें भी मेहनत के बिना हम कुछ प्राप्त नहीं कर सकते। खेती में भी हमने जहाँ बीज बीजा है उस जगह को साफ रखते हैं वहाँ से लदीन वगैरहा निकाल देते हैं।

प्यारेयो! सतगुरु ने दया करके हमारे हृदय रूपी खेत में नाम का पौधा लगाया है, हमें इसकी रखवाली के लिए बिठा दिया है। हमारे ऊपर वही जिम्मेवारी लगाई है जो हम कर सकते हैं। सतगुरु हमेशा बताते हैं कि जो मेहनत करेगा इसमें से बुरे ख्यालों के गंद को निकालेगा तभी उसकी यह खेती फले फूलेगी।

सतगुरु बताते हैं इस खेती को सतसंग का पानी देना है। इसमें पाँचो मृग जिन्हें सन्तों ने कहीं डाकु, कहीं ठग तो कहीं चोर

लिखा है कि ये मृग कितनी-कितनी छलांगे लगाते हैं। जब मृग इस खेती को उजाड़ते हैं तो इसमें सतसंग की बाड़ लगानी पड़ती है। पल्टू साहब कहते हैंः

भाग रे भाग फकीर के बालके, कनक कामिनी बाग लागा।
मार तू लेंगे पया चिल्लाएंगा, बड़ा बेवकूफ तू नाहे भागा।
ऋंगी ऋषि हूं जैसे तो मार लिए, बचा न कोई जो लाख त्यागा।
दास पल्टू बचेगा सोई, जो बैठ सतसंग दिन रात जागा।।

आप भागकर गुरु की शरण में जाएं। बहुत सी लड़कियां सवाल करती हैं क्या औरत ही दोषी हैं? नहीं प्यारेयो! बानी में

आत्मा को स्त्री और परमात्मा को पति कहा गया है। आदमी औरत के लिए जितना खतरनाक है उतनी ही औरत आदमी के लिए खतरनाक है। हम साल के बाद सतसंग में जाते हैं या महीने बाद सतसंग में जाते हैं, कभी-कभी कई-कई साल भी सतसंग में नहीं जाते। सन्त कहते हैं अगर हम दिन-रात इस बाड़ को कायम रखेंगे, पानी देते रहेंगे तभी कामयाब होंगे।

आपके आगे गुरु ग्रंथ साहब में से गुरु अर्जुनदेव जी महाराज का छोटा सा शब्द रखा जा रहा है, गौर से सुनें:

पिंगुल परबत पार परे खल चतुर बकीता।।

गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैं कि सतसंग के अंदर ऐसी बातें होती हैं जिसे हमारी मन-बुद्धि समझ नहीं सकती। जिन लोगों को सतसंग का रस आ जाता है जो इस पर अमल करते हैं, वे जब नाम की तरफ ऊपर की ओर चढ़ाई करते हैं तो वे आँखो से देख लेते हैं कि मन-बुद्धि दोनों ही अज्ञानी हैं। मन बुद्धि से जितना भी विचार कर लें रूहानियत को समझ नहीं सकते क्योंकि जहाँ मन बुद्धि की हद खत्म होती है वहाँ जाकर रूहानियत शुरू होती है।

बुल्लेशाह का पिता आलम-फाजल था, वह लाहौर की मस्जिद का मौलवी था। उसने बुल्लेशाह को पढ़ाकर अच्छा आलम-फाजल बनाया लेकिन ईनायत शाह एक अक्षर भी नहीं जानता था। बुल्लेशाह ने ईनायत शाह के आगे जाकर शीश झुकाया। बुल्लेशाह कहता है:

इल्मों बस करीं ओ यार, इक्को अलफ तेरे दरकार।
बहुता इल्म इजरा ईल ने पढ़या, ते झुग्गा झाटा उसदा सड़या।।

महाराज सावन जब इस तुक की मिसाल देते तो कहते, ''यह तो बुल्लेशाह कहता था कि एक अलफ ही काफी है लेकिन मैं तो कहता हूँ कि रूहानियत के लिए एक अलफ भी नहीं पढ़नी चाहिए।''

मुझे बाबा बिशनदास जी से 'दो-शब्द' का भेद मिला था। उस समय हिन्दुस्तान में शिक्षा का कोई खास प्रचार नहीं था। बाबा बिशनदास जी ने विलायत जाकर पी.एच.डी. की डिग्री प्राप्त की थी। बाबा बिशनदास जी ने एक अनपढ़ साधु बाबा अमोलक दास के पास जाकर अपना सिर झुकाया और कहा, ''बाबा जी! मुझे नर्क से निकाल दें।'' गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

जो प्राणी गोबिंद ध्यावे, पढ़या अनपढ़या परमगति पावे।

सन्त पढ़ाई को बुरा नहीं कहते, पढ़ने से हमें दुनिया की अच्छी वाकफियत मिलती है। अनपढ़ से पढ़ा-लिखा अच्छा है लेकिन पढ़ने से उस पढ़े पर विचार करने वाला अच्छा है। सन्त पढ़ाई के खिलाफ नहीं होते पढ़ाई से अच्छा भविष्य बनता है, हमें अच्छी जिंदगी गुजारने का साधन मिलता है। पढ़ना जरूर चाहिए लेकिन पढ़ने के साथ हमें इसे विचारना भी चाहिए, समझकर इस पर चलना भी चाहिए कि हमने क्या पढ़ा है?

महाराज कृपाल कहा करते थे अगर कमाई वाला पढ़ा-लिखा है तो उसके गले में एक किस्म का फूलों का हार होता है। पढ़ा-लिखा हमें कई तरीकों से समझा सकता है, वह बार-बार नए से नए तरीके बताता है। पढ़ना मकसद नहीं। मकसद यह है कि जो कुछ ग्रंथों में लिखा है उसे पढ़कर हम उस मंजिल पर पहुँच जाते हैं।

गुरु नानकदेव जी महाराज कहते हैं कि मैं **साधुओं की महिमा** क्या बयान करूं? साधुओ की महिमा बयान नहीं हो सकती। हम पिंगले हैं, ये स्थूल टाँगे उस रूहानी चढ़ाई में काम नहीं देती। सच्चखंड सुमेर पर्वत से भी ऊँचा पर्वत है। हमें उस पर्वत पर चढ़ने के लिए रूहानी पैर मिल जाते हैं। मूर्ख से मूर्ख भी ग्रंथों का सार समझने लग जाता है, वह भी रूहानी चढ़ाई चढ़ जाता है।

परमात्मा सर्वशक्तिमान है वह जो चाहे कर सकता है। परमात्मा मूर्ख को पंडित और पंडित को मूर्ख बना सकता है। चेतन को जड़ और जड़ को चेतन बना सकता है। परमात्मा की भक्ति अमोलक धन है। वे जीव धन्य हैं जो इस अमोलक पदार्थ को प्राप्त करने के लिए परमात्मा की याद में, भक्ति में लग जाते हैं।

परमात्मा की भक्ति अमृत की दात है। यह काम, क्रोध, लोभ मोह और अहंकार की नाशक है; सच्चा सुख, सच्ची इज्जत की दाता है। जो प्रेमी परमात्मा की भक्ति करते हैं परमात्मा उन भक्तों को भक्ति का पदार्थ दे देता है लेकिन इस पदार्थ को हम अपने आप प्राप्त नहीं कर सकते जब तक हम किसी पूरे महात्मा की सोहबत-संगत में नहीं जाते। परमात्मा के भक्त परमात्मा से बढ़कर होते हैं। उनकी सोहबत में जाकर हमें सच्ची शान्ति सच्चा सुख मिलता है।

गुरु अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैं कि सन्तों की सभा, सन्तों की संगत हमें तब मिलती है जब परमात्मा संसार के बंधन काटकर हमें अपने साथ मिलाना चाहता है।

सन्त सभा कोट गुर पूरे, धुर मस्तक लेख लखाए।
जन नानक कन्त रंगीला पाया, फिर दुख न लागे आए।।

जब हम दुनिया की संगत छोड़कर परमात्मा के प्यारों की संगत करते हैं, परमात्मा की भक्ति करते हैं तो वह कन्त, नाम रूप परमात्मा हमें मिल जाता है फिर हमारे जन्म-मरण का दुख सदा के लिए समाप्त हो जाता है।

अंधले त्रिभवण सूझया गुर भेट पुनीता।।

सन्तों ने हमें बहुत प्यार से कहा हैः

अंधे से न आखिए जिन मुख लोयण नाहे।
अंधे से ई नानका जो खसमों कुत्थे जाहे।।

आप कहते हैं कि जिनकी स्थूल आँखें नहीं हम उन्हें अंधा नहीं कहते। असली अंधे वे हैं जो अंदर परमात्मा के करोड़ो सूरज जितने प्रकाश का एक छोटा सा दीपक भी नहीं देखते। हम बहरे इसलिए है कि हम अंदर परमात्मा की आवाज को नहीं सुन रहे।

जब हम रोज-रोज महात्मा की संगत करते हैं महात्मा हमारी सच्ची लग्न देखते हैं कि अब यह सच्चे दिल से इस तरफ लगेगा तो महात्मा हमें रूहानी आँखें बख्श देते हैं। ये रूहानी आँखें अंदर उस प्रकाश को देख सकती हैं। जब हम कमाई करते हैं मेहनत करते हैं तो नजर त्रिलोकी तक जाती है।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''सन्त अपने गुणों की नुमाईश नहीं करते। उन्हें भूत, भविष्य और वर्तमान का ज्ञान होता है अगर हम भी मेहनत करके सन्तों के कहने के मुताबिक अंदर जाते हैं तो हमें आसानी से यह समझ आ जाता है कि यह घटना क्यों घटी, क्या यह होनी थी या हम पिछले जन्म में क्या थे, हम कितने जन्म पा चुके हैं और आगे हमने कहाँ जाना है?''

सन्त हमारे कर्मों की नुमाईश नहीं करते कि तू यह करके आया है बल्कि हमारा हौंसला बढ़ाते हैं कि तू बहुत अच्छा है। महाराज कृपाल भी कहा करते थे, ''जीव के मस्तक में जो कर्म लिखे हैं वे सन्तों को इस तरह साफ दिखाई देते हैं जैसे काँच के गिलास में ईलायचियां रखी होती हैं।''

सन्त नामदान देते समय प्रालब्ध को नहीं छेड़ते। सन्त परमात्मा का भाणा मानते हैं और सेवकों से भी कहते हैं कि देख भई! तू परमात्मा का भाणा मान। गुरु, परमात्मा का भाणा मानता है और हमें भाणा मानने के लिए कहता है। हम अपने मस्तक में गरीबी-अमीरी, बीमारी-तंदरूस्ती लिखवाकर लाएं हैं ये हमारे अपने ही कर्म हैं और हमें खुश होकर अपने कर्म भोग लेने चाहिए।

मैं मिसाल दिया करता हूँ जिस तरह कोई अपराधी जेल में चला जाता है वह वहाँ के दुखों को देखकर शरीफ आदमी बनकर जिंदगी गुजारता है तो उसे दुनियावी जेल में भी कुछ छूट मिल

जाती है। इसी तरह हम इस दुखी दुनिया में जो प्रालब्ध कर्म लिखवाकर लाए हैं वह हर एक को भोगने पड़ते हैं। अगर हम शब्द-नाम की कमाई करते हैं तो सतगुरु हमारे कर्म काटने में जरूर मदद करता है, सेवक को पूरा कर्म नहीं भुगतवाया जाता। कई बार प्यार में गुरु हमारे कर्म अपने ऊपर भी ले लेता है।

सन्त हमें प्यार से समझाते हैं कि क्रियमान कर्मों को अच्छा बनाने के लिए अगर हम कोई नेक कर्म दान-पुण्य करते हैं या लंगर में सेवा डालते हैं तो ऐसा ख्याल न करें कि हमें इसका फल मिले। यह परोपकार समझकर करें कि हमारी माया पवित्र हो रही है अगर हम उसका फल माँगते हैं तो हमें उसका फल लेने के लिए फिर संसार में आना पड़ता है।

हम संचित कर्म खत्म कर ही नहीं सकते क्योंकि हम कर्म ज्यादा करते हैं और भोगते कम हैं। ब्रह्म में हर एक का स्टॉक बना हुआ है। गुरु नामदान देते समय दया करके सारे संचित कर्म समाप्त कर देता है, धर्मराज से लेखा अपने हाथ में ले लेता है।

पिछले अवगुण बख्श ले प्रभ अग्गे मार्ग पावे।

नामदान देने से पहले सतगुरु हमारे पिछले अवगुणों को साफ करके आगे का रास्ता खोल देते हैं। सतगुरु कहते हैं, ''प्यारेया! अब ऐसा न हो हाथ में दीपक लेकर कुएँ में गिरे।'' कुएँ में गिरने से बचाने के लिए ही हमारे सतगुरु महाराज कृपाल ने डायरी रखने के लिए कहा कि आप रोज अपना हिसाब-किताब रखें।

हम संचित कर्म खत्म कर ही नहीं सकते क्योंकि हम कर्म ज्यादा करते हैं और भोगते कम हैं। ब्रह्म में हर एक का स्टॉक बना हुआ है। गुरु नामदान देते समय दया करके सारे संचित कर्म समाप्त कर देता है, धर्मराज से लेखा अपने हाथ में ले लेता है।

महिमा साधु संग की सुनो मेरे मीता।।
मैल खोई कोट अघ हरे निरमल भए चीता।।

गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैं कि **साधुओं की महिमा** बयान नहीं की जा सकती। हमारे मन को जन्म-जन्मांतरों से मैल लगी हुई थी। मन आत्मा को मैला कर रहा था, हमने अनेकों पापों के पहाड़ इकट्ठे किए हुए थे साधुओं की संगत ने उन्हें समाप्त कर दिया।

ऐसी भगति गोविंद की कीट हस्ती जीता।।
जो जो कीनों आपनो तिस अभै दान दीता।।

अब गुरु अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैं कि हमारी आत्मा चींटी की तरह कमजोर थी, मन हाथी की तरह विषय-विकारों में मस्त था। शब्द-नाम की कमाई करके चींटी आत्मा ने मन हाथी के ऊपर विजय प्राप्त कर ली, आत्मा मन के पंजे से आजाद हो गई। जिन्हें परमात्मा अपना बना लेता है उन्हें ही गुरु के पास भेजता है। गुरु वह दान देते हैं जिसे न चोर चुरा सकता है न अग्नि जला सकती है न पानी बहाकर ले जा सकता है।

सिंघ बिलाई होय गयो तृण मेरु दिखीता।।
स्त्रम करते दम आढ कौ ते गनी धनीता।।

अब आप प्यार से कहते हैं कि तोप के आगे खड़ा होना आसान है लेकिन भजन करना मुश्किल है। मैं बताया करता हूँ कि कई बार जब मैं गुफा के अंदर भजन करने के लिए जाता था उस समय मन शेर की तरह आगे आकर खड़ा हो जाता था। बहुत से सतसंगी जो मन के साथ संघर्ष करते हैं उन्हें पता है कि मन भजन पर बैठने नहीं देता कभी मन साँप का, कभी शेर का रूप धारण

करता है। साधु की संगत में जाकर हमें नाम का बल मिला। साधु ने हमें ऐसे हथियार से लेस किया कि जो मन हमें शेर की तरह डराता था वह बिल्ली की तरह हो गया।

कवन वडाई कह सकौं बेअंत गुनीता।।
कर किरपा मोहे नाम देहो नानक दरस रीता।।

गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैं कि हमें **साधुओं की संगत** में जाकर जितने गुण प्राप्त हुए उसकी क्या बड़ाई करें। उन्होंने कृपा करके हमें नाम की अमोलक दात बख्श दी है। जुबान में ताकत ही नहीं कि हम उनकी महिमा बयान कर सकें।

गुरु अर्जुनदेव जी महाराज ने इस छोटे से शब्द में थोड़ी सी लाईनों में बताया कि हम रूहानी चढ़ाई चढ़ने में पिंगले हैं। जब संगत में जाते हैं तो सतगुरु नाम देकर हम पिंगलों को टाँगे बख्श देते हैं जिससे हम पहाड़ पर चढ़ जाते हैं। वे आँखें बख्श देते हैं जिससे हम अंदर जाकर आसानी से अपना घर पहचान सकते हैं।

जो मन हमें हाथी की तरह शरीर के अंदर नहीं जाने देता था, परमात्मा से मिलने नहीं देता था लेकिन जब साधुओं ने नाम दिया हमारे ऊपर कृपा की तो वही मन जो शेर था वह बिल्ली की तरह दिखाई देने लगा।

साधुओं ने अपनी दया करके हमें नाम दिया और हमें इतने गुण बख्श दिए जिन्हें हम बयान नहीं कर सकते। हम जिस रास्ते को पहाड़ बनाए बैठे थे उसे एक तिनके की तरह कर दिया। उन्होंने कृपा करके हमारी अंदर की आँखें खोल दी। अब आँखें बंद करते हैं तो परमात्मा के देश में हैं और आँखें खोलते हैं तो हमारा लिंक दुनिया के साथ है। ***

10 जनवरी 1995

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों को सरी आश्रम, कनाडा के बारे में संदेश

संदेश

सरी आश्रम , कनाडा 13 अगस्त 1980

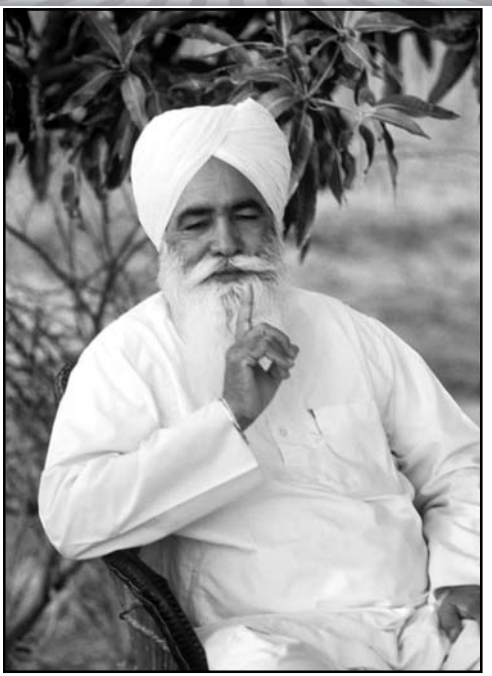

इस जगह हमारी इस मुलाकात का मकसद यह है कि महाराज जी ने हम पर बहुत दया की है उन्होंने हमें इस जगह आश्रम बनाने का आर्शिवाद दिया। इस धरती पर आश्रम बनने से पहले भी हमने यहाँ बहुत रूहानियत कमाई है और अब भी कमा रहे हैं। भविष्य में भी हमने इस जगह पर बहुत सी रूहानियत की दौलत कमानी है। इस आश्रम का बनना हम सब पर महाराज जी की असाधारण दया का सबूत है।

आप जानते हैं कि बहुत पैसा और मेहनत लगाए बिना हम एक छोटा सा मकान भी नहीं बना सकते। आप सबने बहुत मेहनत की है और इसे बनाने में बहुत पैसा खर्च किया है। कबीर साहब कहते हैं:

ज्यों जल बढ़ै य नाव में, घर में बढ़ै य दाम।
दोनों हाथ उलीचिये ये ही सयानो काम।।

दान देने से हमारी दौलत घटती नहीं बढ़ती है। हमारे बहुत ऊँचे भाग्य हों तभी हम किसी अच्छे काम के लिए पैसा खर्च कर सकते हैं। आपने अपना कीमती पैसा अच्छे कार्य के लिए खर्च किया है, अब आपकी जिम्मेवारी है कि इस जगह की बहुत अच्छी तरह संभाल करे।

यहाँ किसी सेवादार का रहना बहुत जरूरी है ताकि वह इस जगह की अच्छी संभाल कर सके। आप जब भी यहाँ हर सप्ताह सतसंग के लिए या जो भी कार्यक्रम हो जैसे अभी है, वह सब कुछ तैयार रखे ताकि यहाँ आकर आप सतसंग और भजन से पूरा लाभ उठा सकें।

जब यह जगह तैयार हो जाएगी और आप लोग यहाँ भजन–अभ्यास करने के लिए आएंगे तब आप लोग भी यहाँ सेवा करने की कोशिश करें क्योंकि जो सेवा करते हैं उन्हें कुछ मिलता है।

मैं आपको बताना चाहता हूँ वह बात यह है कि जब काल, संगत में एक–दूसरे के लिए प्यार देखता है तो वह बर्दाश्त नहीं कर पाता। काल प्रेमियों के दिलों में बैठकर उन्हें अंदर से अलग–अलग कर देता है। जिन सतसंगियों के साथ ऐसा हो रहा होता है उन्हें भी यह पता नहीं होता कि यह सब काल ही कर रहा है। फिर सतसंगी काल की बात मानकर एक–दूसरे में नुख्स निकालते हैं और परेशान हो जाते हैं। हम सभी नामलेवा हैं और उस गुरु के नाम में हम सब भाई–बहन हैं। एक–दूसरे के लिए बुरी भावनाएं रखना या एक–दूसरे से नाराज होना हमारे लिए अच्छा नहीं है।

संगत में सभी प्रेमियों को मेरा प्यार दें।

एक प्रेमी :– क्या हमें ज्यादा से ज्यादा प्रेमियों को आश्रम में आने के लिए प्रेरित करने की कोशिश करनी चाहिए? साल में अभ्यास के चार–पाँच कार्यक्रम होते हैं पिछली बार हमनें बहुत प्रेमियों को आने का निमंत्रण दिया था जिसमें बहुत प्रेमी आए थे जोकि बहुत अच्छा था।

बाबा जी :– जिन लोगों की यहाँ आश्रम में आकर परमात्मा की भक्ति में दिलचस्पी है उन्हें आमंत्रित करें इसमें कोई हर्ज नहीं लेकिन आपको यह ध्यान रखना पड़ेगा अगर कोई आपकी बात ग्रहण नहीं करता तो उसे परेशान करने की जरूरत नहीं। जो लोग यहाँ आकर फायदा उठाना चाहते हैं आप उन्हें अवश्य प्रेरित करें।

एक प्रेमी :– हम सबकी यही प्रार्थना है कि एक दिन इस इलाके के सभी नामलेवा आपको पहचानेंगे कि आप कौन हैं? और सभी इकट्ठे होकर आपके नूर में स्नान करेंगे।

बाबा जी :– काल अपने देश को अपने राज्य को जैसे है वैसे ही रखने की पूरी कोशिश करता है। काल अपने राज्य में लोगों की संख्या बढ़ाना चाहता है इसलिए सबका गुरु की भक्ति करना बहुत मुश्किल है अगर ऐसा हो सकता या हुआ होता तो केवल कबीर साहब या सिर्फ एक ही सन्त इस पूरी दुनिया को मुक्त करने के लिए आया ही काफी था।

काल अपने देश को बनाए रखने के लिए और आत्माओं को अपने काबू में रखने के लिए बहुत मेहनत कर रहा है इसलिए यह संभव नहीं है कि सब लोग यहाँ आएं। हम बहुत भाग्यशाली है कि हमें पूर्ण गुरु मिला है, हमें हमारा प्यारा कृपाल मिला है। हम अपने गुरु के बहुत आभारी है कि वह अपना घर सच्चखंड छोड़कर इंसानी जामें में आया।

अगर आप ज्यादा भजन–सिमरन करेंगे तो आपमें से महक आएगी और जिनके नाक ग्रहणशील होंगे, जिनके मन साफ होंगे वे आपके पास आएंगे वे अपने आप ही आपके प्रति आकर्षित हो जाएंगे। ***

सतसंग– परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

आत्मा की खुराक

गुरु नानकदेव जी की बानी — 16 पी.एस.आश्रम राजस्थान

सन्त-महात्मा मालिक के प्यारे किसी की निन्दा नहीं करते और न ही अपने शिष्यों को किसी की निन्दा करने देते हैं। गुरु नानकदेव जी का मकसद किसी धर्म या सम्प्रदाय की निन्दा करना नहीं, सच का ज्ञान देना था। सन्त-महात्माओं का जातिय तजुर्बा है कि हम जब तक अंदर नहीं जाते, शब्द को नहीं सुनते मुक्त नहीं हो सकते। निन्दा परमार्थ की जड़ काट देती है।

बाबा बिशनदास जी कहा करते थे, ''हर इन्सान के पास दो थैलियाँ होती हैं एक आगे और एक पीछे। अगली थैली में दूसरों के गुण और पिछली थैली में उसके अपने गुण भरे होते हैं इसलिए वह दूसरों के गुण-दोष बयान करता है लेकिन अपने अवगुण नहीं देखता।'' स्वामी जी महाराज कहते हैं, ''लोग हमेशा दूसरों की कमियों को देखकर उनका मजाक उड़ाते हैं, अपनी कमियों की तरफ नहीं देखते।''

बाबा बिशनदास जी अक्सर एक कहानी सुनाया करते थे कि एक अमीर आदमी के पास एक नौकर था जो बहुत अच्छा खाना बनाता था। एक दिन अमीर आदमी ने अपने नौकर से कहा कि आज कुछ मेहमान आ रहे हैं उनके लिए अच्छे खाने बनाओ।

नौकर ने कई तरह के खाने बनाकर उन खानों को जीभ की शक्ल दे दी। मालिक ने खानों को देखकर कहा, ''तुमने सब खानों को जीभ की शक्ल क्यों दी?'' नौकर ने कहा, ''अगर जीभ मीठे वचन बोलती है तो दुश्मन भी मित्र बन जाते हैं।''

अगले दिन उस अमीर आदमी ने अपने नौकर से खराब खाने बनाने के लिए कहा। नौकर ने फिर से सभी खानों को जीभ की शक्ल दे दी। अमीर आदमी ने नाराज होकर पूछा, ''यह सब क्या है?'' नौकर ने कहा, ''मेरे मालिक! अगर जीभ कड़वे शब्द बोले तो लड़ाई-झगड़े हो सकते हैं। कौरवों-पाण्डवों के युद्ध का कारण भी यही जीभ थी।''

शेख बरम ने गुरु नानकदेव जी से पूछा, ''हिन्दू मरे हुए को जला देते हैं और मुसलमान मरे हुए को दफना देते हैं, इसमें से कौन सा तरीका ठीक है?'' उन दिनों भारत में हिन्दू और मुसलमान दो ही फिरके थे। सन्त-महात्मा ईसाई देशों में नहीं जा पाते थे इसलिए इन दो धर्मों का ही जिक्र आता है।

मुसलमानों के धर्म में लिखा है कि जिन्होंने बुरे कर्म किए हैं नरक की आग भी उन्हें जलाने से इंकार कर देती है और जिन्हें दफनाया जाता है वे स्वर्गों में जाते हैं। प्यारेयो! आप देखते हैं कि कुछ को जलाया जाता है कुछ को दफनाया जाता है कुछ को पानी में बहा दिया जाता है और कुछ को जानवर खा जाते हैं। मगर लोग यह नहीं जानते कि इस शरीर के अंदर जो आत्मा थी उसकी मुक्ति हुई या नहीं? लोग सिर्फ कर्मकांडों में ही उलझे हुए हैं।

जब गुरु नानकदेव जी मक्का गए तो वहाँ के धार्मिक लोगों ने उनसे पूछा कि परमात्मा के दरबार में हिन्दू अच्छे हैं या मुसलमान अच्छे हैं? आपने जवाब दिया, ''अपने कर्मों की वजह से हिन्दू और मुसलमान दोनों ही रोते हैं। परमात्मा की भक्ति करने के बाद दोनों ही आपस में लड़ते हैं और अपने आपको अच्छा कहते हैं।''

कबीर साहब से भी ऐसा ही सवाल किया गया था। आप एक मुस्लिम परिवार में पैदा हुए थे। आपका पालन-पोषण काशी के

एक ब्राह्मण परिवार में हुआ। हिन्दू और मुसलमान दोनों ने आपसे पूछा कि आप हिन्दू हैं या मुसलमान? कबीर साहब ने कहा, ''न मैं हिन्दू हूँ न मुसलमान हूँ, मेरा शरीर और मेरी आत्मा परमात्मा की है; जला देने या दफना देने से मुक्ति नहीं मिलती।''

मुस्लिम धर्म में यह भी कहा गया है कि जो आदमी रोज़ाना नमाज पढ़ता है और तीस दिन तक रोज़े रखता है वही सच्चा मुसलमान है। अगर मस्जिद का ईमाम टाँगें नंगी करके नमाज पढ़ता है तो उसकी नमाज स्वीकार नहीं होती। मुस्लिम धर्म के अनुसार औरतों को मस्जिद में नमाज पढ़ना मना है।

इसी तरह हिन्दू धर्म में जो माथे पर तिलक लगाए, जनेऊ पहने, मूर्ति पूजा करे, गायत्री मन्त्र व अन्य मन्त्रों का जाप करे और तीर्थ यात्राएँ करे वही हिन्दू कहलवाता है।

गुरु नानकदेव जी के समय में हिन्दुस्तान में बहुत से योगी थे, जो लाठी लेकर चलते, कानों में बालियाँ पहनते, गोरखनाथ की शिक्षा पर चलकर 'अलख-अलख' बोलते थे। इन योगियों का लक्ष्य दसवें द्वार तक पहुँचना था।

मुसलमाना सिफति सरीअति पड़ि पड़ि करहि बीचारु॥
बंदे से जि पवहि विचि बंदी वेखण कउ दीदारु॥

मुसलमान वे ही किताबें पढ़ते हैं जिनमें उनके धर्म के कानून लिखे होते हैं। वे कहते हैं कि जो इन्सान इन नियमों को मानता है, खतना करवा लेता है वही परमात्मा को पा सकता है।

इस दुनिया में सब धर्मों के अपने-अपने नियम हैं इसीलिए कई किस्म के झगड़े हैं। हम सब यही कहते हैं कि हमारा धर्म ठीक

है, हम ही स्वर्ग में जाएँगे। सन्त हमें समझाते हैं कि हम सच्चाई को समझें और ऊपरी दिखावे पर न जाएँ।

महाराज कृपाल कहा करते थे, ''जब बच्चा पैदा होता है उस पर कोई लेबल नहीं लगा होता कि वह हिन्दू है या मुसलमान है? आप हमेशा सच्चाई के मार्ग पर चलें, 'शब्द-नाम' की कमाई करें लेकिन हम शब्द-नाम की कमाई नहीं करते कर्मकांडों और रीति-रिवाजों में उलझ जाते हैं।''

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''कुरान एक पवित्र किताब है। पैगम्बर मौहम्मद एक महान सन्त थे फिर भी मुसलमानों में कम से कम सत्तर किस्म के धर्म बन गए। मुसलमानों में शिया और सुन्नी दो धर्म हैं जिनमें रोज ही झगड़े होते रहते हैं।''

इसी तरह ईसा मसीह एक है। बाईबल की शिक्षा सबके लिए एक है फिर भी इसकी कई शाखाएं हैं। दूसरे विश्व युद्ध के समय मुझे बाहर जाने का मौका मिला। मैंने वहाँ देखा कि ईसाई ही ईसाइयों को मार रहे थे।

जब मैं केलीफोर्निया गया तो वहाँ के प्रेमियों ने मुझे बताया कि वे कैथोलिक धर्म के हैं। मैंने उनसे कहा कि आप रसल पर्किन्स से बात करें उसे बाईबल के बारे में जानकारी है। मेरे कहने का भाव अगर किसी एक धर्म को मानने वाले ज्यादा हो जाते हैं तो वे दूसरे धर्म को जानना ही नहीं चाहते, अपने धर्म को ही ठीक समझते हैं।

गुरुग्रन्थ साहब में गुरु नानक साहब से लेकर गुरु गोविंद सिंह जी तक की शिक्षाएँ हैं। ये शिक्षाएँ सब सिक्खों के लिए हैं, इसमें गुरुओं ने 'शब्द-नाम' के बारे में जिक्र किया है फिर भी सिक्ख धर्म की पचास से ज्यादा शाखाएं हैं।

इसी तरह हिन्दू धर्म में एक गीता और एक कृष्ण भगवान हैं फिर भी इस धर्म की शाखाओं का कोई अन्त नहीं। कृष्ण और गीता को मानने वालों की शाखाओं का भी कोई अन्त नहीं।

पिछले समय में 'सुरत-शब्द' का भेद देते समय महात्माओं को हिन्दू-मुसलमान दो धर्मों का ही सामना करना पड़ता था लेकिन आज के जमाने में महात्माओं को सात सौ किस्म के धर्मों का सामना करना पड़ता है। आप सोचकर देखें! आज सन्तों के लिए सन्तमत का काम कितना मुश्किल हो गया है।

हिंदू सालाही सालाहनि दरसनि रूपि अपारु॥
तीरथि नावहि अरचा पूजा अगर वासु बहकारु॥

गुरु नानकदेव जी महाराज कहते हैं कि हिन्दू लोग परमात्मा की मूर्ति के आगे धूप जलाकर, फूल चढ़ाकर पूजा करते हैं। सोचते हैं कि इन कर्मकांडों को करने से परमेश्वर के दर्शन कर लेंगे लेकिन यह संभव नहीं क्योंकि मूर्ति बेजान होती है, यह अपनी तरफ नहीं खींच सकती। पहले जमाने में जहाँ कहीं कोई महात्मा भक्ति कर रहा होता था वहाँ भीड़ इकट्ठी हो जाती थी। उस जगह को शुद्ध रखने के लिए अगरबत्ती जलाई जाती थी लेकिन आजकल सफाई रखने के लिए बहुत साधन बन गए हैं।

जोगी सुंनि धिआवन्हि जेते अलख नामु करतारु॥
सूखम मूरति नामु निरंजन काइआ का आकारु॥

गुरु नानकदेव जी कहते हैं कि पहले के समय में योगी अलख नाम को जपते हुए त्रिकुटी से दसवें द्वार में पहुँचते थे लेकिन आजकल के योगियों की यह हालत है कि हाथ में डंडा, कान में बाली और गोरखनाथ की तरह सिर पर साफा बाँधकर अपने

आपको योगी कहलवाते हैं लेकिन ये नाम-मात्र के योगी होते हैं अभ्यास, साधना नहीं करते।

सतीआ मनि संतोखु उपजै देणै के वीचारि॥
दे दे मंगहि सहसा गूणा सोभ करे संसारु॥

दानिओं को दान देकर ही तृप्ति मिलती है वे दान के बदले में इस दुनिया में ही कुछ पाने की इच्छा रखते हैं। वे चाहते हैं कि दुनिया में उनका नाम हो। वे भगवान से कहते हैं कि हे भगवान! हमें और दे ताकि हम ज्यादा दान कर सकें और हमारा नाम हो।

चोरा जारा तै कूड़िआरा खाराबा वेकार॥
इकि होदा खाइ चलहि ऐथाऊ तिना भि काई कार॥

अब गुरु नानकदेव जी कहते हैं कि चोर, मक्कार और झूठे व्यापारी सोचते हैं कि चाहे चोर चोरी करे, व्याभिचारी किसी स्त्री का संग करे, झूठा झूठ बोले; कोई पूछने वाला नहीं लेकिन बहुत अफसोस के साथ कहना पड़ता हैं कि पिछले कर्मों की वजह से यह अनमोल मनुष्य जामा मिला है जिसे ये पाप करके यूं ही गंवा रहे हैं। ये साथ क्या लेकर जाएंगे?

जलि थलि जीआ पुरीआ लोआ आकारा आकार॥
ओइ जि आखहि सु तूंहै जाणहि तिना भि तेरी सार॥
नानक भगता भुख सालाहणु सचु नामु आधारु॥

अब गुरु नानकदेव जी उस परमात्मा के आगे प्रार्थना करते हुए कहते हैं कि हे मालिक! ये आत्माएं चाहे पानी में जन्मी हों चाहे पशु-पक्षियों के जामे में हों चाहे धरती पर रहती हों या आकाश में उड़ती हों ये सब आपका यश गाती हैं। आप इनकी

जरूरतें पूरी करते हैं। यह आपके नाम की ही महिमा है कि आपके बच्चे इस दुनिया में चल-फिर रहे हैं।

सदा अनंदि रहहि दिनु राती गुणवंतिआ पा छारु॥

परमात्मा के प्यारे दिन-रात 'शब्द-नाम' में मस्त रहते हैं और अपने आपको परमात्मा के चरणों की धूल समझते हैं।

मिट्टी मुसलमान की पेड़ै पई कुम्हिआर॥
घड़ि भांडे इटा कीआ जलदी करे पुकार॥
जलि जलि रोवै बपुड़ी झड़ि झड़ि पवहि अंगिआर॥
नानक जिनि करतै कारणु कीआ सो जाणै करतारु॥

गुरु नानकदेव जी शेख बरम को जवाब देते हैं कि आमतौर पर कब्र की मिट्टी नरम होती है। यह मिट्टी धीरे-धीरे इस तरह बदल जाती है जैसे दुनिया बदलती है। एक समय ऐसा आता है कि कोई पहचान भी नहीं पाता कि यहाँ कभी कब्र भी थी। कुम्हार कब्र की मिट्टी से बर्तन, घड़े इत्यादि बनाता है। जब उन बर्तनों को भट्टी में जलाया जाता है तो यह मिट्टी रोती है।

अब आप कहते हैं, ''मैं किसी धर्म की निन्दा नहीं करना चाहता। यह सिर्फ परमात्मा ही जानता है कि कौन स्वर्ग में जाता है और कौन नरक में जाता है? हे शेख बरम! आओ हम शब्द-नाम की कमाई करें ताकि असलियत जान सकें।''

बिनु सतिगुर किनै न पाइओ बिनु सतिगुर किनै न पाइआ॥
सतिगुर विचि आपु रखिओनु करि परगटु आखि सुणाइआ॥
सतिगुर मिलाऐ सदा मुकतु है जिनि विचहु माहु चुकाइआ॥
उतमु एहु बीचारु है जिनि सचे सिउ चितु लाइआ॥
जगजीवनु दाता पाइआ जगजीवनु दाता पाइआ॥

गुरु नानकदेव जी कहते हैं, ''मैं आपको सच कहता हूँ कि सतगुरु के बिना कोई परमात्मा को नहीं पा सकता। परमात्मा ने खुद ही सतगुरु को अपने तक पहुँचने के लिए बिचौलिया बनाया हुआ है। परमात्मा के हुक्म से ही सतगुरु से मिलाप होता है।''

जब गुरु मिल जाता है वह 'नाम' दे देता है। जो नाम की कमाई करता है वह दुनिया से कुछ नहीं छिपाता। खुले आम कहता है, ''मुझे सतगुरु मिल गया है, अब मैं मुक्त हूँ।'' जो लोग शब्द-नाम की कमाई करते हैं उनका सांसारिक रसों-कसों से मोह छूट जाता है वे मुक्त हो जाते हैं। हमारे जीवन के वही क्षण अच्छे हैं जो हमने शब्द-नाम की कमाई में लगाए हैं।

अगर हम नाम लेने के बाद 'शब्द-नाम' की कमाई करते हैं और गुरु के वचनों का पालन करते हैं तो जो परमात्मा हमारे अंदर बैठा है हमें उसके दर्शन अपने आप ही होने लग जाते हैं।

इस तरह गुरु नानकदेव जी ने शेख बरम को उसके सारे सवालों के जवाब दिए और यह भी बताया कि नाम के खज़ाने से ही मुक्ति प्राप्त होती है।

महात्माओं ने सतसंग की महिमा गाई है। महाराज कृपाल कहा करते थे, ''सैकड़ों जरूरी काम छोड़कर सतसंग में जाएं और हजारों जरूरी काम छोड़कर भजन में बैठ जाएं। जब तक आत्मा को खुराक नहीं दे लेते तब तक तन को खुराक न दें। जिस तरह तन की खुराक भोजन है उसी तरह **आत्मा की खुराक** भजन है।''

धन्य अजायब

मुम्बई में सतसंग का कार्यक्रम :

भूरा भाई आरोग्य भवन,
शान्तिलाल मोदी मार्ग (नजदीक मयूर टाकीज)
कांदिवली (पश्चिम) मुम्बई – 400 067
98 33 00 40 00, व 022–24 96 50 00

9 जनवरी से 1 3 जनवरी 201 9

16 पी.एस.आश्रम राजस्थान में सतसंग के कार्यक्रम:

02 से 06 फरवरी 201 9